

आभास लगान (Quasi Rent)

प्रतिपादक- प्रो. मार्शल

जो 'रिकाडों के लगान की अवधारणा' पर आधारित है।

मार्शल ने यह विचार प्रस्तुत किया कि *मनुष्य द्वारा निर्मित मशीनों तथा यंत्रों की पूर्ति अल्पकाल में नहीं बढ़ाई जा सकती जबकि दीर्घ काल में इन मशीनों की पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है।*

अतः अल्पकाल में यह पूँजीगत साधन भी वही लक्ष्य प्रस्तुत करते हैं जो भूमि अल्पकाल और दीर्घकाल में करती है अर्थात् स्थिर पूर्ति का लक्षण।

पूँजीगत वस्तुओं को जो आय अल्पकाल में प्राप्त होती है वह लगान की तरह ही होती है

मार्शल ने इसे आभास लगान कहा है

मार्शल के अनुसार, "वह आय जो मशीनों तथा मनुष्य द्वारा निर्मित उत्पादन के दूसरे बाजारों से उपलब्ध होती है, आभास लगान कहलाती है।"

प्रो. सिल्वरमैन के अनुसार, "उत्पत्ति के उन साधनों की अतिरिक्त आय जिनकी पूर्ति दीर्घकाल में तो बढ़ाई जा सकती है परंतु अल्पकाल में स्थिर रहती है, को आभास लगाना कहते हैं।"

स्टेनियर एवं हैग के अनुसार, "अल्पकाल में उत्पत्ति के किसी साधन भूमि को छोड़कर को मांग की अपेक्षा पूर्ति कम होने पर जों अधिक्य मिलता है उसे आभास लगान कहते हैं।"

आधुनिक अर्थशास्त्री में से अधिकांश अर्थशास्त्री एक उत्पादक को परिवर्तनशील लागतों के ऊपर अल्पकाल में जो आधिक्य प्राप्त होता है उसे आभास लगान कहते हैं।

दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में सभी लागते परिवर्तनशील लागते होती है तथा कुल आगम और कुल लागत बराबर होती है अतः दीर्घकाल में आभास लगान समाप्त हो जाता है

अल्पकाल में एक उत्पादक की किसी वस्तु की उत्पादन लागत दो प्रकार की होती है-

1. निश्चित अथवा अनुपूरक लागत (Fixed or Supplementary Cost)
2. प्रमुख या परिवर्तनशील लागत (Prime or Variable cost)

निश्चित लागत उत्पादन के साथ न तो बढ़ती है और ना ही कम होती है जैसे भवन मशीन आदि पर किया गया व्यय, किंतु परिवर्तनशील लागत उत्पादन की मात्रा के अनुपात में घटती बढ़ती रहती है- जैसे श्रम कच्चा माल आदि।

अल्पकाल में यदि किसी उत्पाद को परिवर्तनशील लागत के बराबर भी वस्तु बेचने की कीमत प्राप्त हो जाती है तो वह उत्पादन जारी रखेगा क्योंकि उत्पादन बंद करने पर भी उसे निश्चित लागत का भार सहना पड़ता है। उत्पादक को अल्पकालिक के परिवर्तनशील लागत से जितनी अधिक आय प्राप्त होती है उसे आभास लगान कहते हैं क्योंकि वे अतिरिक्त आय एक तरह से निश्चित तथा स्थायी साधनों का प्रतिफल है संक्षेप में,

$$\text{कुल आभास लगान} = \text{कुल आगम} - \text{कुल परिवर्तनशील लागत}$$

चित्र के अनुसार, AVC तथा AC क्रमशः
औसत परिवर्तन से लागत और औसत लागत
को बताते हैं

OP_1 कीमत पर फर्म का अल्पकाल में उत्पादन
 OQ_1 होगा तथा इस कीमत पर OP पर
प्रति इकाई आभास लगान=

$$AR - AVC =$$

$$E_1Q_1 - SQ_1 = E_1S$$

इसी प्रकार OP_2 कीमत पर प्रति के आभास
लगान E_2K ($E_2Q_2 - KQ_2$) होगा कीमत
 OP_3 पर कोई आभास लगान नहीं है क्योंकि इस
कीमत पर औसत परिवर्तन लागत तथा कीमत
दोनों E_3Q_3 और इन दोनों का अंतर शून्य है
इस प्रकार E_3 उत्पादन का बंद बिंदु है क्योंकि
इस बिंदु पर कम कीमत होते ही उत्पादक
अल्पकाल में भी उत्पादन बंद करना होगा दूसरे
शब्दों में आभास लगान कभी ऋणात्मक नहीं
होता है

